International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 15-12-2020; Accepted: 30-12-2020; Published: 25-01-2021
www.alleducationjournal.com
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 41-44

स्वच्छ भारत अभियान एवं गांधी की प्रासंगिकता

आदित्य कुमार
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा, एवं सत्याग्रह के साथ–साथ स्वच्छता की मशाल भी भारत में जला रखी थी। उनका कहना था कि स्वतंत्रता के लिए कुछ समय तक इंतजार किया जा सकता है लेकिन स्वच्छता के लिए ऐसा करना संभव नहीं है। गांधी जी से प्रेरणा लेते हुए भारत सरकार ने देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत कर हमें यह प्रेरणा दी कि हम व्यक्तिगत स्तर पर अपनी साफ सफाई का हमेशा ध्यान रखते हैं तो क्या यह हमारी जिम्मेदारी नहीं बनती कि हम अपने देश को भी साफ रखें। महात्मा गांधी जी ने स्वच्छ भारत का सपना देखा था उसे पूर्ण करने का दायित्व भारत के हर नागरिक का है। इस संदर्भ में देखा जाए तो भारत को स्वतंत्र हुए सात दशक बीत गए लेकिन अभी हम लोग स्वच्छता के उस स्तर को नहीं प्राप्त कर सके जिसका सपना गांधी जी ने देखा था।

मूल शब्दः स्वच्छता, विकास, स्वशासन, राष्ट्रहित, सत्य, अहिंसा, एवं सत्याग्रह आदि।

प्रस्तावना
गांधी जी के सपने को पूरा करने हेतु प्रधानमंत्री जी ने सन् 2014 में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से स्वच्छ भारत की अलख जगाई साथ ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती (2 अक्टूबर सन् 2019) को खुले में शौच से मुक्त भारत का लक्ष्य रखा। प्रधानमंत्री जी के इस मिशन का ही परिणाम है कि आज सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, केरल, हरियाणा जैसे राज्य खुले में शौच से मुक्त अर्थात् ओ0डी0एफ0 राज्य बन गए जो कि भारत जैसे विशाल देश के प्रधानमंत्री के महत्वाकांक्षी अभियान की सार्थकता को दर्शाती है। वैश्विक स्तर पर देखें तो लगभग सभी देशों ने इस दिशा में कदम उठाए हैं और कई देशों ने अपने सराहनीय प्रयासों से सफलता भी प्राप्त की है। स्वच्छता के इतने व्यापक महत्व के कारण ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष के साथ सन 2008 में वैश्विक विकास के एजेंडा की शुरुआत की जिसमें स्वच्छता को विशेष महत्व दिया गया। इस क्रम में सन् 2010 में सुरक्षित जल एवं स्वच्छता को मानव अधिकार के रूप में मान्यता देने तथा सन् 2013 में संयुक्त राष्ट्र के उप–महासचिव द्वारा खुले में शौच को समाप्त करने का आह्वाहन किया गया। स्वच्छता के सुरक्षित प्रबंधन के साथ ही अपशिष्ट जल उपचार एवं पुनः उपयोग आदि को सतत विकास लक्ष्यों के तहत केंद्रीय स्थान दिया गया। इतना ही नहीं स्वच्छ महोत्सव सन् 2019 के कार्यक्रम में भारतीय राष्ट्रपति ने कहा था कि हमें स्वच्छता के व्यापक अर्थ को अपनाते हुए आगे बढ़ना होगा उदाहरण के लिए स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना भी स्वच्छता के दायरे में आता है।

स्वच्छता पर महात्मा गांधी के विचार
महात्मा गांधी का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है और जो व्यक्ति स्वच्छ नहीं है वह स्वस्थ नहीं रह सकता और जो स्वस्थ नहीं रहेगा वह भारत देश के निर्माण में सहयोग नहीं कर सकता। बेहतर साफ–सफाई से ही भारत के गांव को आदर्श गांव जैसा बनाया जा सकता है। इस सन्दर्भ में गांधीजी का मानना था कि शौचालय को अपने ड्राइंग रूम की तरह साफ रखना जरूरी है। उन्होंने यहां तक बताया था कि साफ–सफाई के द्वारा ही हम अपनी सभ्यता को जिंदा रख सकते हैं। गांधीजी का मानना था कि अपने आंतरिक मन के अंदर कोई चीज सबसे पहले सीखने वाली है तो वह है स्वच्छता और उन्होंने कहा भी था कि मैं किसी को गंदे पैर के साथ अपने मन से नहीं गुजरने दूंगा। गांधी जी ने एक बार कहा था कि हिंदुस्तानियों पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता रहा है कि उनकी आदतें बहुत ही बेहूदा होती हैं और वह अपने घर तथा आस–पड़ोस को साफ सुथरा नहीं रखते हैं। मैंने महसूस किया है कि मैं जनता को सफाई के प्रति उनके कर्तव्यों को इतनी आसानी से नहीं गिना पा रहा था जितना आसानी से उनको उनके अधिकारों के बारे में बता रहा था। उनका मानना था कि भारत में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त शौचालय की कमी के लिए उतने ही प्रयास किए जाने चाहिए जितने स्वराज्य प्राप्ति के लिए हो रहे हैं। उन्होंने कहा था मैं एक हिंदू के तौर पर बोल रहा हूं क्या हमारे पवित्र मंदिर की गलियों का इतना गंदा रहना सही है, आसपास बने मकानों की वजह से यह गलियां तंग और यातनाप्रद हैं अगर हमारे मंदिर तक खुलेपन व स्वच्छता की मिसाल नहीं रख सकते हैं तो हमारा स्वशासन क्या हो सकता है। इसके साथ ही उन्होंने 31 दिसंबर 1924 के एक नागरिक समारोह में कहा था कि पश्चिम से हम एक चीज सीख सकते हैं और सीखना भी चाहिए वह है 'सफाई का विज्ञान'। उन्होंने पहले दक्षिण अफ्रीका और भारत में स्वराज के लिए संघर्ष करते हुए और कचरे के प्रबंधन के लिए अपना संघर्ष जारी रखा। गांधी जी दक्षिण अफ्रीका के अपने प्रवासन के समय जब वहां प्लेग महामारी फैली तो उन्होंने न केवल सफाई अभियान शुरू किया बल्कि मरीजों की सेवा भी की। इस तरह हम कह सकते हैं कि सफाई और स्वच्छता गांधीवादी जिंदगी गुजारने का एक अभिन्न अंग है। उन्होंने शारीरिक कल्याण और एक स्वस्थ वातावरण के लिए सफाई को एक महत्वपूर्ण अंग माना था हालांकि गांधी जी ने स्वच्छता को छोड़कर बाकी कई पश्चिमी रीति–रिवाजों का मजाक उड़ाया लेकिन अपने गुजारे गए वक्त (पश्चिमी देशों में) के बाद उन लोगों के स्वच्छता के स्तर से काफी प्रभावित हुए और भारत में भी स्वच्छता के उस स्तर को प्राप्त करने को उत्सुक हुए। भारतीयों की गंदी आदतों की ओर इशारा करते हुए गांधी

जी ने शौचालय में सफाई रखने पर बल दिया और लिखा मुझे एक बिंदु पर अपना बचाव करना होगा जिसका नाम है शौचालय सुविधाएं। हमारी कई बीमारियों की वजह हमारे शौचालयों की स्थिति और हमारी किसी भी जगह पर मल मूत्र करने की बुरी आदत है। गांधी हिंदूवादी रूढ़िवादिता को स्वीकार नहीं करते थे और इसका सबसे पहला जिक्र उनकी आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' में मिलता है जहां पर वे अपनी माता से पूछते हैं कि उन्हें किसी अछूत को छूने से क्यों रोका जाता है। गांधी जी ने सफाई को छुआछूत के साथ जोड़ने के विचार का खंडन किया। गांधी जी को यह बात बहुत ही अनुचित लगी कि सफाई के काम को समाज में बहुत ही बुरी नजर से देखा जाता है। उन्होंने भारतीयों में सफाई और स्वच्छता से जुड़ी शिक्षा की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि सफाई कार्य भारत में एक विशेष कार्य होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि हर कोई खुद में ही एक सफाई कर्मी होना चाहिए। इसके साथ–साथ गांधी जी ने सफाई के संदर्भ में पंचायतों की भूमिका पर भी व्यापक जोर दिया था, उनका मानना था कि गांव में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की प्रारंभिक शिक्षा, प्रत्येक परिवार तक चरखे की पहुंच, सफाई एवं स्वच्छता के लिए पंचायतें उत्तरदाई होनी चाहिए। देखा जाए तो 1948 में ही गांधी जी का देहावसान हो गया लेकिन अपने सफाई, स्वच्छता, सत्याग्रह आदि विचारों के द्वारा लिखित, भावनात्मक और व्यावहारिक रूप से आज भी वह जनमानस के रक्त में जिंदा है और पूरा भारत उनके सपने को साकार करने में लगा है।

स्वच्छ भारत अभियान

विश्व की द्वितीय सर्वाधिक आबादी वाले देश, भारत की 68.84 प्रतिशत जनसंख्या (जनगणना 2011) गांव में निवास करती है। सन् 2011 की जनगणना के आंकड़ों की ही बात करें तो भारत की ग्रामीण आबादी का दो–तिहाई से अधिक जनसंख्या शौचालय की सुविधाओं से वंचित थी। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत की ग्रामीण जनसंख्या के मात्र 32.7 प्रतिशत आबादी शौचालय सुविधा से युक्त थी जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में बीमारी एवं घातक संक्रमण हेतु प्रमुख उत्तरदाई कारक है। खुले में शौच की स्थिति में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करनी भी एक बड़ी चुनौती रही है। खराब स्वच्छता सुविधाओं एवं प्रदूषित भूमिगत जल एवं कचरा निस्तारण के उचित प्रबंधन के अभाव के फलस्वरुप कुपोषण, लंबाई में वृद्धि का ना होने जैसी बीमारी तथा कभी–कभी महामारी जैसी घातक स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं। एक आंकड़े के अनुसार भारत में लगभग 40 प्रतिशत बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास अवरुद्ध होने में गंदगी प्रमुख कारक रही है। साथ ही स्वच्छता के अभाव के चलते भारत सहित विभिन्न देशों को व्यापक स्तर पर मौद्रिक हानि का भी सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान की घोषणा एक सराहनीय, क्रांतिकारी एवं एक अनूठी पहल रही। शुरुआती दौर में स्वच्छता मात्र एक विचारधारा थी लेकिन 2 अक्टूबर 2014 (गांधी जी के 145 वें जन्म दिवस) को प्रधानमंत्री द्वारा इसको स्वच्छ भारत अभियान के रूप में शुरू करने के बाद इसे एक 'राष्ट्रीय जन आंदोलन' का रूप दे दिया गया। इसके अंतर्गत 4041 सांविधिक नगरों के सड़क, पैदल मार्ग और अन्य कई स्थलों को शामिल किया गया। इस मिशन के तहत 2 अक्टूबर 2019 (गांधी के 150 वें जन्मदिवस) तक भारत को पूर्ण रूप से स्वच्छ बनाने की बात कही गई थी। भारत सरकार के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय द्वारा इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है।

यह केवल सरकार ही नहीं बल्कि जनता की भी जिम्मेदारी और भागीदारी हैं जैसा कि प्रधानमंत्री जी ने कहा कि यह मिशन राष्ट्रहित से प्रेरित एवं राजनीति से परे हैं। इस तरह आज हम गांधी जी के विचारों के और करीब आ गए हैं किन्तु यह मिशन बिना किसी रूकावट के निरंतर चलता रहे इसके लिए लोगों में इसकी जिम्मेदारी का अहसास होना बेहद आवश्यक है। व्यापक अर्थों में देखा जाए तो यह भारत की सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए ही है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है। स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत निम्नलिखित आवश्यकताओं एवं जिम्मेदारियों को समझा जा सकता हैः–

- यह आवश्यक है कि भारत के हर घर में शौचालय हो साथ ही खुले में शौच करने की लोगों की मानसिकता को भी समाप्त किया जाए। इस हेतु भारत सरकार द्वारा दरवाजा बंद अभियान भी चलाया गया।
- नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दोबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समाधान, वैज्ञानिक तरीके से कचरा प्रबंधन व्यवस्था को लागू करना।
- स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की मानसिकता और स्वभाव में परिवर्तन लाना और साफ–सफाई की प्रक्रियाओं का पालन करना।
- इसमें काम करने वाले लोगों को स्थानीय स्तर पर कचरे के निष्पादन का नियंत्रण करना तथा उसकी बेहतर रूपरेखा तैयार करने के लिए सहायता करना।
- संपूर्ण भारत में साफ सफाई की सुविधा को व्यापक स्तर पर ले जाने के लिए निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी को बढाना ।
- ग्रामीण क्षेत्र में जीवन की गुणवत्ता तथा दैनिक जीवन स्तर में सुधार लाना
- स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थाओं को निरंतर साफ–सफाई के प्रति जागरूक करना।

इस प्रकार कहें तो सिर्फ नियम बना देने या कोई आंदोलन से समस्या का निराकरण नहीं होगा जब तक कि लोग उसके प्रति अपनी जिम्मेदारी को ना समझें और व्यवहार में उसे अपना ना लें।

स्वच्छ भारत मिशन, भारत के हर नागरिक के गौरव से जुड़ा हुआ मिशन है जैसा कि भारत के राष्ट्रपति जी ने स्वच्छ भारत (सन 2019) महोत्सव के दौरान कहा था 'स्वच्छ भारत मिशन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल एक सरकारी अभियान ही नहीं बल्कि प्रत्येक भारतीय का अभियान बन गया है, संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों को 2030 तक प्राप्त किया जाना था परंतु भारत उससे 11 साल पहले अर्थात् सन् 2019 तक ही स्वच्छता से जुड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तैयार है जिसके लिए देश का प्रत्येक नागरिक प्रशंसा का पात्र हैं।'

स्वच्छता हेतु भारत सरकार की अन्य पहल

स्वच्छ भारत अभियान के अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा स्वच्छता पर कई पहल की गई, जिसमें दरवाजा बंद अभियान, स्वच्छाथॉन 1.0, स्वच्छता ही सेवा, स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि, उषा अभियान (कर्नाटक सरकार) आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त स्वच्छ भारत अभियान के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु भारत सरकार द्वारा वर्ष 2014 में स्वच्छ भारत कोष की स्थापना भी की गई।

- **स्वच्छाथॉन 1.0**

यह अभियान पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय द्वारा सितंबर 2017 में चलाया गया, जिसमें स्वच्छता सफाई आदि से जुड़े मुद्दों पर लोगों की राय जानने तथा समाधान हेतु एक बेहतर रूपरेखा प्रस्तुत करने की अपेक्षा की गई। जिससे एक दीर्घकालिक योजना का निर्माण किया जा सके, जिसके अंतर्गत छह श्रेणियों में कुल 3 हजार से अधिक प्रविष्टियां (अंतर्राष्ट्रीय प्रविष्टियों) सहित प्राप्त हुई वे छह श्रेणियां निम्नलिखित हैः

1. शौचालयों के प्रयोग पर नजर रखना
2. व्यवहार में परिवर्तन आरंभ करना
3. दुर्गम क्षेत्रों में शौचालय की तकनीकी
4. स्कूलों में शौचालय के रखरखाव तथा परिचालन के लिए कारगर समाधान
5. मासिक धर्म से संबंधित कचरे के सुरक्षित निस्तारण के लिए तकनीकी समाधान
6. विस्टा को शीघ्र समाप्त करने के लिए समाधान। आदि।

- **स्वच्छता ही सेवा अभियान**

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द द्वारा कानपुर जनपद, उत्तर प्रदेश के ईश्वरीगंज गांव से 15 सितंबर 2017 को 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' का शुभारंभ किया। अभियान के अंतर्गत स्वस्थ एवं स्वच्छ भारत के निर्माण का संकल्प लिया गया। इसके साथ–साथ अभियान के अंतर्गत अस्पताल एवं मूर्तियों की सफाई, बस स्टॉप और रेलवे स्टेशन की सफाई तथा पार्क एवं तालाब की सफाई के साथ–साथ अन्य सार्वजनिक स्थलों की सफाई एवं स्वच्छता सुनिश्चित करने हेतु आवाहन किया गया। स्वच्छता ही सेवा अभियान को राष्ट्रीय आंदोलन एवं जन–जन का आंदोलन एवं उनके उत्तरदायित्व के साथ–साथ बहुपक्षीय हितों से जुड़ाव की बात करते हुए महामहिम राष्ट्रपति जी ने कहा था 'भारत स्वच्छता और आरोग्य के लिए लड़ाई लड़ रहा है।' इसके साथ भारतीय जनमानस को इस अभियान से जुड़ने हेतु राष्ट्रपति जी ने आवाहन किया।

- **स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि**

स्वच्छता ही सेवा के साथ 'स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि' अभियान भी चलाया गया। विदित है कि यह आंदोलन स्वच्छता ही सेवा अभियान की भांति राष्ट्रीय स्वरूप वाला अभियान रहा। स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धी अभियान के अंतर्गत सन 2017 में 16 अगस्त से 8 सितंबर के मध्य निबंध, लघु फिल्म और पेंटिंग से जुड़ी राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। प्रतियोगिता के अंतर्गत तीनों वर्गों में अलग–अलग शीर्षक सुनिश्चित किया गये थे, जो निम्नलिखित हैः

- फिल्म 'स्वच्छ भारत बनने में मेरा योगदान'
- निबंध 'मैं स्वच्छता के लिए क्या करूंगा/करूंगी'
- पेंटिंग 'मेरे सपनों का स्वच्छ भारत'

भारत सरकार को आशा के अनुरूप लगभग 2.9 करोड़ प्रपत्र प्राप्त हुए, जो यह सिद्ध करता है कि स्वच्छता को लेकर न केवल भारत सरकार व राज्य सरकारें सजग हैं बल्कि आम जनमानस के साथ–साथ स्कूली बच्चे अर्थात् भारत की नई पीढ़ी भी स्वच्छता के प्रति उतना ही सचेत है। स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि अभियान से जुड़ी प्रतियोगिता में सम्मिलित प्रतिभागियों में से चुने गए प्रतिभागियों को गांधी जयंती, 2 अक्टूबर सन् 2017 के अवसर पर पुरस्कार भी प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा गंगा नदी की सफाई एवं स्वच्छता हेतु 'गंगा एक्शन प्लान' एवं 'नमामि गंगे अभियान' भी चलाया गया। कर्नाटक सरकार द्वारा सफाई से जुड़े एक अन्य अभियान 'उषा अभियान' चलाया गया जो विशेषतया स्कूली लड़कियों की सुरक्षा से जुड़े प्रश्नों से संबंधित रहा।

देखा जाए तो स्वच्छ भारत अभियान के साथ–साथ उसके अनुषांगिक अभियान कहीं ना कहीं गांधी जी के सपनों को ही आगे बढ़ाने का काम करते हैं और गांधी जी ने जिस भारत के निर्माण का स्वप्न देखा था उसे पूरा करने में एक बेहतर विकल्प प्रदान करते हैं। जैसा कि गांधीजी के स्वच्छता के प्रति विचार था कि हमें हमेशा स्वच्छता के साथ रहना चाहिए तभी हम पूर्णरूप से शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकें। हमें शौचालयों की साफ सफाई पर विशेष ध्यान देकर देश को खुले में शौच मुक्त करने का प्रयास करना चाहिए, हमें नदियों की सफाई रखनी चाहिए। बाह्य स्वच्छता के साथ–साथ अन्तर्मन की स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। आज स्वच्छ भारत अभियान में भी कमोबेश इन्हीं बातों पर जोर दिया गया है जिसके परिणाम भी मिलने शुरू हो गए हैं। जैसा कि गांधीजी का मानना था कि हर व्यक्ति को अपनी गंदगी स्वयं साफ करने चाहिए तो वहीं दूसरी ओर स्वच्छ भारत अभियान के तहत प्रधानमंत्री जी ने लोगों से प्रतिवर्ष 100 घंटे श्रमदान के लिए प्रेरित किया। इसके अन्तर्गत 'एक कदम स्वच्छता की ओर' जैसे मन्त्र के तहत एक ऐसा रचनात्मक और सहयोगात्मक मंच प्रदान किया गया है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति सरकारी संस्था या निजी संगठन द्वारा प्रोत्साहित अभियान में भाग ले सकता है, जिससे वह अपने निजी दैनिक कार्यों में से कुछ घंटे निकाल कर भारत में स्वच्छता संबंधी कार्यों में अपना योगदान दे सकते हैं। इसी तरह स्वच्छ भारत अभियान में राष्ट्रीय स्तर पर न केवल सरकारी पहल को सुनिश्चित करता है बल्कि जनमानस को भी इस अभियान से जुड़ने हेतु प्रेरणा प्रदान करता है। इस तरह से प्रत्येक नागरिक अपनी जिम्मेदारी समझते हुए अपना योगदान देगा तो गांधी के सपनों का भारत ज्यादा स्वच्छ भारत अब अधिक दूर नहीं हैं।

निष्कर्ष

भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान को महात्मा गांधी से जोड़कर कहीं न कहीं इस आंदोलन को एक व्यापक रुप दिया है और लोगों का भरोसा भी प्रदान किया है। भारतीय नागरिकों के जीवन में सफाई और स्वच्छता का महत्व समझाने के लिए गांधी जी द्वारा किए गए प्रयास वाकई काबिले तारीफ हैं। इसकी प्रतिक्रिया के अन्तर्गत प्रत्येक भारतीय की यह जिम्मेदारी बनती है कि पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छ भारत का सपना पूरा करने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें। इस आन्दोलन को और व्यापक रूप देते हुए राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने स्वच्छ महोत्सव कार्यक्रम, 6 सितंबर 2019 में कहा था कि स्वच्छ भारत मिशन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह केवल एक सरकारी अभियान नहीं है बल्कि प्रत्येक भारतीय का अभियान बन गया। सभी ने अपनी जिम्मेदारी समझते हुए स्वच्छता से जुड़े कार्य किए हैं। इसके साथ–साथ उन्होंने स्वच्छता को व्यापक अर्थ में अपनाने पर जोर दिया तथा भारत सरकार के 'जल जीवन मिशन' हेतु स्वच्छता को आवश्यक शर्त बताया। व्यक्तिगत स्तर की स्वच्छता शारीरिक स्तर व दैनिक कार्य से लेकर व्यापक स्तर की स्वच्छता, स्वच्छ पर्यावरण सुरक्षा व स्वच्छ नदियां, जल आदि पूर्ण स्वस्थ मानव जीवन के लिए अति आवश्यक हैं जैसा कि कहा गया है 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है' और हम स्वस्थ तभी रह सकते हैं जब हम स्वच्छ रहें। इसी संकल्पना के साथ जीना होगा कि स्वच्छता ही सेवा है।

सरभूत रूप में कहें तो स्वच्छता का हमारे जीवन में बहुत महत्व है और हम सब स्वच्छता ही सेवा जैसी भावना को अंगीकार कर अपने देश भारत को स्वच्छ बनाने का प्रयास कर सकते

हैं। इस संदर्भ में देखे गए अपने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सपनों के भारत की संकल्पना के साथ–साथ सतत विकास लक्ष्यों को साकार करने हेतु भारत सरकार के संकल्प को परिपूर्ण कर सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. रेनी विल्फ्रेडः स्वच्छता के परिदृश्य में बदलाव और जन आंदोलन का निर्माण, कुरूक्षेत्र, अंक 12, अक्टूबर 2017
2. सुदर्शन आयंगरः गांधीजी और स्वच्छता, कुरूक्षेत्र, अंक 12, अक्टूबर 2017
3. नरेंद्र सिंह तोमरः स्वच्छ गांव स्वस्थ गांव, कुरूक्षेत्र, अंक 1, नवंबर 2018
4. डॉ0 आलोक मिश्राः मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियां और भारतीय स्वास्थ्य दर्शन, कुरूक्षेत्र, अंक 1, नवंबर 2018
5. नरेंद्र सिंह तोमरः स्वच्छ भारत मिशनः व्यवहार परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन तक, कुरूक्षेत्र, अंक 12, अक्टूबर 2016
6. इंदिरा खुरानाः ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन, कुरूक्षेत्र, अंक 12, अक्टूबर 2016
7. परमेश्वरन अय्यरः साकार होगा स्वच्छ भारत का सपना, योजना, अंक 10, अक्टूबर 2017
8. अरुण जेटलीः स्वच्छता में निवेश का अर्थशास्त्र, कुरूक्षेत्र, अंक 12, अक्टूबर 2017
9. स्वच्छता की यात्राः नवभारत टाइम्स, 03 अक्टूवर, 2019
10. दनिया मेरे आगेः स्वच्छता के सामने, जनसत्ता, 23 नवम्बर, 2019